ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.3556919

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

हिंदी–काव्य में 'साकेत' का स्थान

मिनेश्वरी(शोधार्थी) [1]
[1] दू.ब महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मुख्य शब्द – हिंदी–काव्य, साकेत, स्थान

Cite This Article: मनेश्वरी. (2019). "हिंदी–काव्य में 'साकेत' का स्थान." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11), 82-84. https://doi.org/10.5281/zenodo.3556919.

मैथिलीशरण गुप्त भारतीय मनीषा के ऐसे साधक हैं, जो मानवता और संस्कृति के रक्षार्थ प्राणपन समर्पित रहे भारतीय प्राचीन विचारधारा व आधुनिक विचार और जीवन–पद्धति से जोड़ने में सफलता हासिल किए हैं। 'साकेत' इनका सफल प्रयास रहा। यह एक सर्वोत्तम प्रबंध–काव्य है, जो भारतीय आस्थाओं और मान्यताओं को भावनात्मक स्वर मिला। प्राचीन विषयवस्तु को नए परिवेश में प्रस्तुत किया है। 'साकेत' के सृजन के मूल दा प्रेरणाएँ थी– ''(1) रामभक्ति, (2) भारतीय जीवन को समग्र रूप में देखने और समझने की लालसा।''[1] रामभक्ति स्वभावतः रामकाव्य की ओर संकेत करती है, जीवन–दर्शन जीवन–काव्य की ओर।

आधुनिक युग–विचार और जीवन–पद्धति से दोनों से क्रांतिकारी हैं। ऐसे युग में प्राचीन सामग्री को लेकर रचना करना जिसका उद्देश्य प्राचीनता को सुरक्षित रखकर, आधुनिक युगीन पाठकों को भी संतुष्टि प्रदान कर सके। राम–काव्य कविता का आदि–स्रोत है, इस पर अनेक रचनाकारों ने रचनाएँ की हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम इन सभी रचनाओं के प्राण–तत्व हैं। राम संसार के बीच रहकर इसमें प्रविष्ट कर जीवन की वास्तविकता को प्राप्त करते हैं। वे स्वयं नर हैं और नरत्व में ही नारायण का समावेश कर लेते हैं, परंतु वे अवतार नहीं है और नरत्व का भी लोप हुआ। इन रचनाओं में मनुष्य उन गुणों का विकास कर लेते हैं कि वे देवता बन जाते हैं। उनके बाल–काण्ड के प्रथम सर्ग में कवि वाल्मीकि ने अपने काव्य के मुख्य पात्र के विषय में नारद से पूछा– 'समग्र रूपिणी लक्ष्मी कमेक संश्रिता नर' अर्थात् मूर्तिमति समग्र लक्ष्मी ने किस एकमात्र मनुष्य का आश्रय लिया ? तब नारद जी ने कहा– ''देवष्वपि पश्यामि न कश्चिदे भिगुवैर्युतम् श्रूयकांत – गुणैरेभिर्यो युक्तो नर चंद्रमा।''[2]

रामायण में उसी नर–चंद्र का वर्णन है, देवता का नहीं। रामायण में देवता अपने को हीन बनाकर मनुष्य नहीं हुआ या अपने में कमी कर, बल्कि मनुष्य ही अपने गुणों से उच्च या महान होकर देवता हो गया। वाल्मीकि के बाद भी कुछ समय तक राम ऐतिहासिक पुरुष के रूप में बने रहे। लोक की वीर–पूजा की उनकी ओर श्रद्धा और गर्व से बढ़ती रही, परंतु बौद्धों ने ईश्वर के अभाव में स्वयं बुद्ध को ईश्वरीय गुणों से युक्त कहना आरंभ कर दिया, जिससे भारत में अवतारवाद का जन्म हुआ। फिर राम को विष्णु का अवतार मान लिया गया, उनमें ईश्वरत्व का आरोप हो गया। 'विष्णु पुराण' में राम के स्वरूप की पूर्ण प्रतिष्ठा हुई और आध्यात्म रामायण में राम को ईश्वर

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.3556919

अवतार मान लिया गया। अब उनका ब्रह्मत्व साध्य से सिद्ध हो गया। साधारण मनुष्य को अनंतशील, शक्तिवान बना ऐश्वर्यवान रूप प्रदान कर ईश्वरत्व का पूर्ण रूप कर दिया।

रामकथा का विस्तार चौदहवीं शताब्दी में अधिक हुआ। रामानंद जी ने रामभक्ति संप्रदाय को जन्म दिया, जिससे राम किताबों से निकलकरजन–जन तक पहुँचे रामानंद जी के राम 'बैकुंठ बिहारी' विष्णु रूप होकर लोक में लीला विस्तार करने वाले उनके अवतार राम का आश्रय लिया। राम के स्वरूप में काफी परिवव्रन आया, परंतु उसका मूल स्वरूप (ढाँचा) अब भी वही था, जो आदिकवि ने बताया था। इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। राम गंभीर, मर्यादा पुरुषोत्त्म का अवतार भी जैसे–का–तैसा रहा। राम के जीवन–चरित्र की व्यापकता बराबर बनी चली आ रही है। यही हिंदी के राम–काव्य की पृष्ठभूमि है, इसी प्रकार तुलसी के राम की स्थापना हुई। तुलसी को व्यापक और निश्चित स्वरूप मिला।

तुलसीदास हिंदी के प्रथम विख्यात रचनाकार हैं, उनके पूर्व मुनिलाल आदिकवि की रचनाएँ मिली, परंतु हिंदी पाठकों के बीच जनसाधारण के बीच रामकथा को तुलसीदास ने ही प्रतिस्थापित किया। इस तरह गोस्वामी तुलसीदास का काव्य ही हिंदी में रामकथा का इतिहास रचा है। अतः 'साकेत' का काव्य स्थान निर्धारित करने के लिए पहले तुलसी काव्य रामचरित के साथ देखना चाहिए। इसी संबंध में नगेन्द्र अपने विचार इस तरह प्रकट करते हैं– ''तुलसीदास ने राम के विराट स्वरूप को दर्शन द्वारा ग्रहण कर जीवन के व्यापक क्षेत्र में अवतरित किया है। उन्होंने राम में आनंद–शक्ति का समावेश कर उनका ईश्वर्य (संपूर्ण ऐश्वर्यवान) रूप पूर्ण कर दिया और उधर राम को जीवन में आर्य–जीवन को समाहित करते हुए राम का भारतीय जीवन से अक्षुण्ण संबंध स्थापित कर दिया है। उनके राम में विशिष्टाद्वैत भाव के ब्रह्म के पाँचो रूप मिलते हैं। तुलसी भक्त–साधक थे अतः उनका मानस धार्मिक भक्ति–काव्य है, उसमें धर्म में जीवन प्राप्त करने का सफल प्रयत्न है।''[3]

'साकेत' जीवन–काव्य है, जीवन में धर्म ढूँढ निकालने की चेष्टा है। 'साकेत' में धार्मिक सिद्धांत व इस युग की बौद्धिकता का समावेश किया है। उनकी आस्था ने बुद्धि को स्वस्थ रखा है और बुद्धि ने आस्था को शुद्ध रखा है। तुलसी का जीवन साधना के लिए था। मैथिलीशरण का जीवन स्वयं साधना है। उनमें जीवन को जीने की पूर्ण आकांक्षा है, इसलिए 'साकेत' में जीवन का अंश ज़्यादा दिखाई पड़ा है। तुलसी के नाम विरोधियों को क्षमा नहीं कर पाते, परंतु गुप्त जी इस दृष्टिकोण से सहिष्णु रहे। तुलसी दास जीने धर्म–क्षेत्र में अच्छा समन्वय उपस्थित किया, परंतु गुप्त जी ने भौतिक जीवन में समन्वय पर बल दिया। 'साकेत' में रामजन्म ''परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृतम्।''[4] इसलिए उन्होंने नर–लीला की 'साकेत' में भक्ति और मुक्ति दोनों का सामंजस्य स्थापित करवाया है, भावुकता और बुद्धि का।

किसी महाकाव्य में अपने निजी गुणों के साथ युग–जीवन का बिम्ब होना अनिवार्य है। इस दृष्टि से 'साकेत' के समक्ष कुछ अन्य ग्रंथ आते हैं, जिसमें 'कामायनी' और 'प्रियप्रवास' है।

विषयवस्तु की दृष्टि से तीनों महाकाव्य में भारतीय पौराणिक गाथाओं को ही अपनी कथावस्तु का आधार बनाया, साथ–ही परंपरागत रूपों में वर्णन न कर नवयुगों के अनुरूप नई उद्भावनाएँ प्रकट की, जिससे कथाएँ सहज और विश्वसनीय हो गई। तीनों महाकाव्यों में कथा के अधिक भाग को घटित न दिखाकर वर्णित किया गया है, भारतीय संस्कृति की उज्ज्वल झाँकी सुस्पष्ट प्रस्तुत की गई है। जीवन के स्थान विशेष पर सबने बल दिया है। आधुनिक जीवन की अधिकांश समस्याओं को उनके संभावित उत्तर के साथ प्रस्तुत किया गया है।

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.3556919

तीनों महाकाव्य भारतीय इतिहास के अलग–अलग युग पर आधारित हैं– 'कामायनी' आदियुग की कथा, 'प्रियप्रवास' द्वापर युग की और 'साकेत' त्रेतायुग की। 'प्रियप्रवास' में वियाग की प्रधानता है। 'साकेत' व 'कामायनी' में संयोग–वियोग की प्रधानता है। महाकाव्यों में भारतीय संस्कृति की परंपरा का अनुसरण हुआ, इसी आधार पर नर–नारी के पारस्परिक संबंध, नारी की पति–परायणता, सुकुमारता, संयोग–वियोग, अधीरता, क्षुब्धता आदि के चित्र अंकित किए गए हैं। नायक–नायिका अपने सामान्य लक्षणों से विभूषित हैं, इसी कारण उनमें वीरता, शौर्य, त्याग, लोकप्रियता आदि गुण विद्यमान हैं। नायिकाएँ त्याग, दया, ममता, करुणा, सहज स्नेह, प्रेम आदि गुणों से ओत–प्रोत हैं। नारी की उन्नत व उत्कृष्ट गुणों को दिखाया है।

महाकाव्यों में जीवन की व्याख्या करते हुए मानव सुख–समृद्धि, शांति, समता, सहृदयता आदि मानवीय गुणों का भी वर्णन किया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि विभिन्न रचनाकारों ने रचनाएँ जीवन के उत्थान के लिए किया है।

इससे स्पष्ट है साकेतकार ने 'साकेत' की रचना उपेक्षित पात्र उर्मिला के जीवन को प्रकाश में लाने के बहाने, राम के प्रति समर्पण भाव प्रदर्शित करने हेतु किया। हमने देखा कि 'साकेत' उर्मिला के रूप में नारी के त्याग व अनुराग को प्रगट करते हुए सामान्य जीवन पर जो प्रभाव पड़ा, उसको बताकर आज के संदर्भ में भी इसका असर कम नहीं है, क्योंकि जीवन तो अनवरत गति से चलायमान है और हमेशा रहेगी। 'साकेत' गुप्त की वह महानतम काव्य है, जिसमें काव्य का चरम विकास हुआ है। गुप्त जी ने जो अनुपम कृति हिंदी'–जगत् को भेंट की है, वह दुर्लभ है, जिसमें भारतीय समाज और संस्कृति का विशाल चित्र प्रस्तुत किया गया है। कवि ने जिस तरह से विभिन्न भावों, संवेदनाओं को सहजता के साथ संजोया है, वह केवल एक समर्थ कलाकार की लेखनी ही कर सकती है।

संदर्भ–सूची

1. नगेन्द्र. मैथिलीशरण गुप्त पुनर्मूल्यांकन; 41
2. वही; 126.
3. वही; 126.
4. वही; 127.
5. गुप्त, मैथिलीशरण. साकेत. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2016
6. उमाकांत, मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के अख्यात. दिल्ली,1964.
7. गोस्वामी तुलसीदास. रामचरितमानस. गोरखपुर : गीता प्रेस